Issue 7 – July / जुलाई - 2023

कृषक सारथी

Monthly Newsletter of
KRISHAK BHARATI COOPERATIVE LIMITED

Empowering nation's rural development through Cooperatives

Marketing Director's Message

Dear Co-operators,

Welcome to the 7th edition of KRIBHCO's monthly newsletter, where we embrace the theme of "Prosperity through Cooperatives." I would like to express my sincere gratitude to the dedicated editorial team for their unwavering commitment to delivering insightful content to our valued readers.

In this edition, we focus on the remarkable achievements and positive impact of cooperatives on fostering prosperity. Our stories highlight the transformative power of unity and collaboration, as well as the vital role played by cooperatives in driving economic growth and sustainable development.

As we continue to explore the strength of our cooperative ecosystem, we celebrate the collective efforts that empower farmers and rural communities. Through this newsletter, we aim to inspire and inform, ensuring that knowledge and innovation continue to fuel progress in the agricultural sector.

Together, let us strive for a brighter and more prosperous future through the spirit of cooperation.

Warm regards,

V. S. R. Prasad
Marketing Director

EDITOR'S DESK

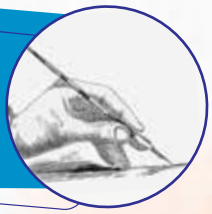

Dear Readers,

With great excitement, we bring you the seventh edition of "Krishak Saarathi," our monthly newsletter. This edition revolves around a theme close to our hearts - "Prosperity through Cooperatives." Cooperatives have played a pivotal role in shaping the agricultural landscape, fostering unity, and empowering farmers worldwide.

As we discuss the impact of cooperatives on agriculture, we must acknowledge their significance in creating equitable growth and sustainable development. Cooperatives provide farmers with collective strength, enabling them to access better resources, fair markets, and advanced technologies.

Cooperatives not only improve the livelihoods of farmers but also contribute to global food security. By promoting knowledge-sharing and collaborative approaches, we can address the challenges of climate change, food production, and distribution.

Our gratitude extends to the Ministries of Cooperation, Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, as well as PIB, for their invaluable support and the wealth of information they provided.

We extend our heartfelt appreciation to all the contributors who have shared their valuable insights and expertise in shaping this edition. Your contributions have enriched the content and made it a compelling read for our readers.

As you delve into the pages of this edition, we hope that you find it both informative and thought-provoking. Our goal is to inspire and empower our readers with the latest developments, best practices, and success stories in the agricultural domain. Thank you for your continued support and enthusiasm. Together, let us strive for a sustainable and prosperous future in agriculture.

Happy reading!

Dr. V. K. Tiwari
Dy. GM (Mktg)

Editorial Board

Sh. V S R Prasad, Mktg. Director
Chairman

Dr. V K Tiwari, DGM (Mktg)
Chief Editor

Sh. Sharvan Kumar, CM (Mktg)
Member – FAS

Sh. Devisht Agarwal, DM (MS)
Member – IT and Technical

Sh. Nitesh Kumar Mishra, DM (Mktg)
Editing, Design and Circulation

Sh. Raj Babu Kumar, AM (Mktg)
Member – Agriculture News Updates

Sh. Rishav Arora, AM (MS)
Member – Current Affairs

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री
श्री अमित शाह ने
नई दिल्ली में सहकारिता क्षेत्र में FPO विषय पर राष्ट्रीय महासंगोष्ठी–2023 का उद्घाटन किया और साथ ही PACS द्वारा 1100 नए FPOs के गठन की कार्य योजना का विमोचन किया

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने नई दिल्ली में सहकारिता क्षेत्र में FPO विषय पर राष्ट्रीय महासंगोष्ठी-2023 का उद्घाटन किया और साथ ही PACS द्वारा 1100 नए FPOs के गठन की कार्य योजना का विमोचन किया। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, केन्द्रीय सहकारिता राज्यमंत्री श्री बी एल वर्मा, सचिव, सहकारिता मंत्रालय, ज्ञानेश कुमार और सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, श्री मनोज आहूजा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अपने संबोधन में श्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अलग सहकारिता मंत्रालय का गठन करने का निर्णय एक अलग दृष्टिकोण से लिया। उन्होंने कहा कि हमारे देश में सहकारिता आंदोलन बहुत पुराना है लेकिन आज़ादी के 75 वर्ष के बाद जब पीछे मुड़कर देखते हैं तो पता चलता है कि देश में सहकारिता आंदोलन कई टुकड़ों में विभक्त हो गया। उन्होंने कहा कि सहकारिता की दृष्टि से देश को तीन वर्गों में बांट सकते हैं- ऐसे राज्य जहां सहकारिता आंदोलन अपने आप को आगे बढ़ाने और मज़बूत करने में सफल रहा है, ऐसे कुछ राज्य जहां सहकारिता आंदोलन अभी भी चल रहा है, और,ऐसे कुछ राज्य जहां सहकारिता आंदोलन लगभग मृतप्राय हो गया है। श्री शाह ने कहा कि इतने बड़े देश में, जहां लगभग 65 करोड़ लोग कृषि से जुड़े हैं, सहकारिता आंदोलन को रिवाइव करना, इसे आधुनिक बनाना, इसमें पारदर्शिता लाना और नई ऊंचाइयां छूने का लक्ष्य तय करना बहुत आवश्यक हो गया है। उन्होंने कहा कि कृषि और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में सहकारिता ही एकमात्र ऐसा आंदोलन है जिसके माध्यम से हर व्यक्ति को समृद्ध बनाया जा सकता है। श्री शाह ने कहा कि किसी के पास पूंजी है या नहीं है, लेकिन अगर श्रम करने का हौसला, काम करने की लगन और अपने आप को आगे लेजाने की कुव्वत है तो सहकारिता आंदोलन बिना पूंजी वाले ऐसे लोगों को समृद्ध बनाने का बहुत बड़ा साधन बन सकता है । उन्होंने कहा कि देश के 65 करोड़ से ज़्यादा कृषि से जुड़े लोगों को संबल देने और कोऑपरेटिव के माध्यम से उनकी छोटी पूंजी को मिलाकर एक बड़ी पूंजी बनाकर उन्हें समृद्ध बनाने की दिशा में सहकारिता आंदोलन महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विगत 2 सालों में सहकारिता मंत्रालय ने कई इनीशिएटिव्स लिए हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी के नेतृत्व में देश में FPO के गठन का निर्णय लिया गया। उन्होंने कहा कि मोदी जी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद कृषि को मज़बूत और किसानों को समृद्ध करने के लिए कई कदम उठाए, जिनमें से एक FPO के लिए भी है। इनके माध्यम से किसानों को बहुत फायदा हुआ है लेकिन सहकारिता क्षेत्र में FPO और इसका फायदा बहुत सीमित मात्रा में पहुंचा था और ऐसा इसीलिए हुआ क्योंकि हमने लक्ष्य रखकर लक्षांक तय नहीं किए। श्री शाह ने कहा कि PACS अगर FPO है तो PACS के सभी किसानों के पास FPO का मुनाफा

पहुंचेगा। उन्होंने कहा कि किसानों को समृद्ध बनाने की सबसे अधिक क्षमता अगर किसी में है तो वो PACS के माध्यम से बने FPO में है, इसीलिए PACS, FPO और SHG के रूप में तीन-सूत्रीय ग्रामीण विकास समृद्धि का मंत्र लेकर कृषि मंत्रालय और सहकारिता मंत्रालय आने वाले दिनों में कंधे से कंधा मिलाकर काम करेंगे। उन्होंने कहा कि PACS अगर FPO बनना चाहते हैं तो NCDC उन्हें मदद कर सकता है और इसके लिए कोई सीमा नहीं है, इसीलिए आज की ये महासंगोष्ठी सहकारिता आंदोलन को गति देने की संगोष्ठी बनने वाली है।

श्री अमित शाह ने कहा कि कृषि, पशुपालन और मत्स्यपालन-आधारित आर्थिक गतिविधियां भारतीय अर्थव्यवस्था की ताकत हैं, लेकिन कभी इनके बारे में देश मे चर्चा नहीं होती। उन्होंने कहा कि आज ये तीनों सेक्टर मिलकर भारत की जीडीपी का 18 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। श्री शाह ने कहा कि एक प्रकार से कृषि, पशुपालन और मत्स्यपालन देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और इन्हें मज़बूत करने का मतलब देश की अर्थव्यवस्था को मज़बूत करना है। उन्होंने कहा कि अगर मैन्युफैक्चरिंग के द्वारा जीडीपी बढ़ती है तो रोज़गार के आंकड़े इतने नहीं बढ़ते, लेकिन अगर कोऑपरेटिव्स के माध्यम से कृषि, पशुपालन और मत्स्यपालन को मज़बूत करते हैं तो जीडीपी के साथ-साथ रोज़गार के अवसर भी बढ़ेंगे।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि भारत में लगभग 65 प्रतिशत लोग कृषि और इससे संबद्ध गतिविधियों के साथ जुड़े हैं, लगभग 55 प्रतिशत कार्यबल कृषि और इससे संबद्ध गतिविधियों में लगा है। उन्होंने कहा कि परोक्ष रूप से देखें, तो इन 65 प्रतिशत लोगों और 55 प्रतिशत कार्यबल के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों में बाकी सभी सेवाएं भी एक प्रकार से कृषि पर ही निर्भर हैं। श्री शाह ने कहा कि आज देश के 86 प्रतिशत किसान छोटे और सीमांत किसान हैं, जिनके पास एक हेक्टेयर से कम भूमि है। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया में सिर्फ भारत एकमात्र ऐसा देश है जिसने छोटे किसानों को मज़दूर नहीं बनने दिया और वे अपनी भूमि के मालिक हैं। उन्होंने कहा कि कृषि को आधुनिक बनाने, कृषि उपज के अच्छे दाम पाने और कृषि को फायदेमंद बनाने के लिए हमें परंपरागत तरीकों से बाहर निकलकर आज के समयानुकूल तरीकों को अपनाना होगा और ये PACS FPO इसी क्रम में एक नई शुरूआत है।

श्री अमित शाह ने कहा कि सरकार और कोऑपरेटिव सेक्टर की पूरी ज़िम्मेदारी है कि कृषि के साथ जुड़े हुए सभी लोगों का जीवन उतना ही सुविधाजनक हो जितना सेवा क्षेत्र से जुड़े लोगों का है। उन्होंने कहा कि FPO की कल्पना 2003 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के समय योगेन्द्र अलग समिति ने की थी। उन्होंने कहा कि जब मोदी जी देश के प्रधानमंत्री बने तब उन्होंने FPO के सुझाव को अमल में लाने का निर्णय लिया। श्री शाह ने कहा कि इस इनीशिएटिव का परिमाम है कि आज 11,770 FPO देश में काम कर रहे हैं और इनके माध्यम से देश के लाखों किसान अपनी आय बढ़ाने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहा कि बजट में 10,000 FPO स्थापित करने की घोषणा की गई और वर्ष 2027 तक इनकी स्थापना करने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार ने 6,900 करोड़ रूपए इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए आवंटित किया है। श्री शाह ने कहा कि इनपुट से लेकर आउटपुट तक, मैन्युफैक्चरिंग से लेकर प्रोसेसिंग और ग्रेडिंग तक और पैकेजिंग से लेकर मार्केटिंग और भंडारण तक पूरी व्यवस्था, यानी कृषि उत्पादन से लेकर मार्केटिंग तक की पूरी व्यवस्था FPO के तहत हो जाए, ऐसा कॉन्सेप्ट प्रधानमंत्री मोदी लेकर आए हैं। श्री शाह ने कहा कि इनपुट की खरीद, बाजार की जानकारी, टेक्नोलॉजी और इनोवेशन का प्रचार, उपज के लिए इनपुट का एकत्रीकरण, भंडारण की सुविधाएं, सुखाने, सफाई और ग्रेडिंग की व्यवस्थाएं, ब्रांड बिल्डिंग के साथ-साथ पैकेजिंग, लेबलिंग और मानकीकरण की प्रक्रियाएं, गुणवत्ता पर नियंत्रण. संस्थागत खरीदारों और कॉर्पोरेट घरानों के साथ जुड़कर किसान को ज्यादा दाम दिलाने की एक अच्छी व्यवस्था और ज़रूरत पड़ने पर किसानों को सारी सरकारी योजनाओं की सूचना देकर योजनाओं के वाहक बनने का काम भी FPO ने कियाहै।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने देश के सभी FPOs का आह्वान किया कि वे जिस स्वरुप में हैं उसी स्वरूप में काम करते रहें लेकिन अपने साथ PACS को भी जोड़ते रहें। उन्होंने कहा कि एक नया हाइब्रिड मॉडल बनाना चाहिए जो PACS और FPO के बीच की व्यवस्था के आधार पर सूचना के आदान-प्रदान, मुनाफा शेयरिंग और मार्केटिंग की पूरी व्यवस्था कर सकें। श्री शाह ने कहा कि मोदी सरकार ने अब तक 127 करोड़ रूपए से ज्यादा ऋण FPO को दिया है जो 6900 करोड़ रूपए के अतिरिक्त है। आदिवासी जिलों में भी 922 FPO बने हैं जो वन उपज के लिए FPO का काम करते हैं। इससे मालूम होता है कितनी बारीकियों के साथ नरेन्द्र मोदी सरकार और कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर आगे बढ़े हैं। उन्होंने कहा कि आज गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और पंजाब ने FPO के क्षेत्र में बहुत अच्छा काम किया है।

श्री अमित शाह ने कहा कि हमें फिर से युवाओं में इस बात को प्रस्थापित करना है कि कृषि फायदे का व्यापार है, इसे आधुनिक तरीके से करने की जरूरत है और मार्केटिंग की व्यवस्था करनी

है। उन्होंने कहा कि अगर यह आत्मविश्वास देश के 12 करोड़ किसानों में भर देते हैं तो कृषि उपज तो बढ़ेगी ही, जीडीपी में हमारा योगदान भी बढ़ेगा और साथ ही यह 12 करोड किसान आत्मनिर्भर बनेंगे और देश को भी आत्मनिर्भर बनाएंगे। श्री शाह ने कहा कि मोदी जी ने इसके लिए कई काम किए हैं और अब कोऑपरेटिव FPO के माध्यम से मोदी सरकार किसान को व्यापारी और उद्योजक बनाने की दिशा में भी आगे बढ़ेंगे।

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री ने कहा कि कृषि क्षेत्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कार्यकाल में बजट आवंटन में लगभग 5.6 गुना वृद्धि हुई। उन्होंने कहा कि वर्ष 2013-14 में 21000 करोड रूपए का बजट था, जो आज मोदी जी के नेतृत्व में वर्ष 2023-24 में 1.15 लाख करोड रुपए का हो गया है। उन्होंने कहा कि पहले संयुक्त बजट 21000 करोड़ रूपए था, आज 4 विभागों में से सिर्फ कृषि मंत्रालय का बजट 1.15 लाख करोड़ रूपए हो गया है और यह बताता है कि देश के प्रधानमंत्री और उनके नेतृत्व में सरकार की प्राथमिकता कृषि है।

श्री अमित शाह ने कहा कि 2013-14 में देश में 265 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन हुआ था और 2022-23 में 324 मिलियन हुआ है। उन्होंने कहा कि कुछ किसान एमएसपी की बात करना चाहते हैं, इस पर कहीं पर भी चर्चा करने के लिए सरकार तैयार है। श्री शाह ने कहा कि धान की एमएसपी में 10 साल में 55% और गेहूं की एमएसपी में 51% की वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में वर्तमान सरकार आजादी के बाद पहली ऐसी सरकार है जिसने किसानों के लिए लागत से कम से कम 50% अधिक मुनाफा तय किया है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने धान की खरीदमें 88% की वृद्धि की है, यानी, लगभग डबल धान खरीदा है और गेहूं की खरीद में दो तिहाई, यानी, 72% की वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि 251 लाख मीट्रिक टन गेहूं खरीदने का काम नरेन्द्र मोदी सरकार ने किया है और लाभार्थियों की संख्या लगभग 2 गुना हो गई है। उन्होंने कहा कि यही बताता है मोदी सरकार ने किसानों के कल्याण के लिए कितना काम किया है। इसके साथ ही जैविक खेती को बढ़ावा दिया, सिंचाई में 72 लाख हेक्टेयर का माइक्रो इरिगेशन कर 60 लाख किसानों को कवर किया,सूक्ष्म सिंचाई कोष बनाया,राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन बनाया, 24 हजार करोड़ का कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर फंड बनाया, कृषि यंत्रीकरण का कोष बनाया और ई-नाम के माध्यम से लगभग 1260 मंडियों को जोड़ने का काम भी नरेन्द्र मोदी सरकार ने किया है।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि मोदी सरकार के कार्यकाल में कृषि क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है और अब उसका फायदा किसान तक पहुंचे इसके लिए सहकारिता मंत्रालय बनाया गया है। **उन्होंने कहा कि कोऑपरेटिव के मंत्र के अनुसार जो पसीना बहाता है, मुनाफा उसी के पास जाता है और यह काम सहकारिता मंत्रालय ने किया है।**

श्री अमित शाह ने कहा कि सहकारिता क्षेत्र में मोदी सरकार ने कई काम किए हैं। PACS के मॉडल बायलॉज बनाए जिन्हें 26 राज्यों ने स्वीकार कर लिया है। अब PACS डेयरी भी बन पाएंगे, मछुआरा समिति भी बन पाएंगे, पेट्रोल पंप चला पाएंगे, गैस की एजेंसी भी चला सकेंगे, CSC भी बन पाएंगे, सस्ती दवाई की दुकान भी चला सकेंगे, सस्ते अनाज की दुकान भी चला सकेंगे, भंडारण का भी काम करेंगे। गांव की हर घर जल की समिति में जल व्यवस्थापन में भी कमर्शियल काम कर सकेंगे। श्री शाह ने कहा कि ऐसा कर मोदी सरकार ने 22 अलग-अलग कामों को PACS के साथ जोड़ने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि जब तक PACS मजबूत नहीं होता, APEX कभी मजबूत नहीं हो सकता। FPO, PACS और सेल्फ हेल्प ग्रुप एक-दूसरे के पूरक बनेंगे, तो आने वाले दिनों में ग्रामीण विकास और कृषि विकास का एक नया युग शुरू होगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नई दिल्ली के प्रगति मैदान में दो दिवसीय 17वें भारतीय सहकारी महासम्मेलन का उद्घाटन किया, कार्यक्रम की अध्यक्षता केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने की

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सहकारी विपणन के लिए ई-कॉमर्स वेबसाइट और सहकारी विस्तार और सलाहकार सेवा पोर्टल का भी शुभारंभ किया।
- गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि मोदी जी सहकारिता मंत्रालय की जरूरत को पूरी तरह से समझते हैं और हर इनीशिएटिव में उनका मार्गदर्शन मिलने से सहकारिता के क्षेत्र में कई बदलाव आए हैं।
- श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सहकारिता के क्षेत्र में देश में कई पहल की गई हैं, मोदी जी का ये कार्यकाल सहकारिता क्षेत्र के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जाएगा।
- विगत 25-30 सालों से सहकारिता क्षेत्र में एक ठहराव देखने को मिला है, लेकिन मोदी जी के नेतृत्व में सहकारिता ने जो योगदान एक सदी में दिया है उससे ज़्यादा योगदान 25 सालों में करने का संकल्प इस सहकारी महासम्मेलन में हमें करना है।
- मोदी जी ने चीनी मिलों के सालों से लंबित 15 हजार करोड़ रूपए के टैक्स डिस्प्यूट का विधेयक के माध्यम से निपटारा किया और भविष्य में टैक्स डिस्प्यूट ना हों, इस प्रकार की व्यवस्था की है।
- नए क्षेत्रों को भी सहकारिता के साथ हमें समाहित करना है, सहकारिता में कम्प्यूटराइज़ेशन, मॉडर्नाइज़ेशन और एक खुलापन लाने के लिए सेल्फ-डिसिप्लिन के साथ हमें सुधारों को स्वीकारना होगा।
- मोदी सरकार संवैधानिक ढांचे के तहत राज्यों और केन्द्र के अधिकारों में हस्तक्षेप किए बिना सहकारिता कानून में समानता लाने का काम कर रही है
- मोदी सरकार ने पैक्स को अनेक गतिविधियों से जोड़कर उसे वायबल बनाने का काम कर रही है।
- दशकों से आयकर कानून में सहकारिता के साथ अन्याय होता था और कंपनियों के साथ इन्हें समानता नहीं मिलती थी, प्रधानमंत्री मोदी जी ने एक ही बार में सारी असमानताओं को दूर कर कोऑपरेटिव को कंपनियों के बराबर का दर्जा दिया है।
- सहकारिता क्षेत्र को भी स्वयं पारदर्शिता व परिवर्तन को स्वीकारना पड़ेगा, यह कठिन जरूर है मगर असंभव नहीं है और ऐसा करने में अगर हम सफल होते हैं तो पूरे देश के सहकारिता आंदोलन को बड़ा बल मिलेगा।

The Importance of Monsoon for Indian Agriculture

"The monsoons are not just rain; they are the lifeblood of our land, rejuvenating everything in their path. They bring hope, renewal, and a sense of celebration"

Monsoon, the seasonal rainfall pattern that occurs in the Indian subcontinent, holds immense significance for agriculture in India. The agricultural sector, being the backbone of the Indian economy, heavily relies on the monsoon for irrigation, water supply, and overall crop production. The arrival and distribution of monsoon rains play a pivotal role in determining the success and productivity of farming in the country.

One of the primary reasons why monsoon rains are crucial for Indian agriculture is the provision of water for irrigation. In a country where a significant portion of agricultural land is rain-fed, the monsoon rainfall becomes the primary source of water for crops. Farmers eagerly await the arrival of monsoon as it replenishes the water bodies, such as rivers, lakes, and reservoirs, ensuring an adequate supply of water for agriculture throughout the year. The monsoon rains help recharge groundwater levels, which in turn supports the irrigation needs during the dry months. Therefore, the timely and sufficient monsoon rainfall is essential for meeting the water demands of crops and sustaining agricultural activities.

The availability of water through monsoon rainfall directly impacts crop cultivation and production in India. Most crops, including rice, wheat, sugarcane, pulses, and cotton, rely heavily on monsoon rains for their growth and development. The monsoon season provides the necessary moisture and humidity required for germination and early growth stages of crops. Insufficient or delayed monsoon rainfall can lead to drought-like conditions, adversely affecting sowing, crop yield, and overall agricultural productivity.

Furthermore, the proper distribution of monsoon rainfall across different regions and states is equally crucial. The agricultural sector in India exhibits regional variations, with some regions receiving heavier rainfall than others. It is essential for different crops to receive the appropriate amount of rainfall at the right time. Excessive rainfall can cause water-logging, erosion, and disease outbreaks, while inadequate rainfall can result in crop failures and loss of income for farmers. Therefore, a well-distributed monsoon ensures balanced agricultural growth across the country.

India is home to a vast population, and ensuring food security is of paramount importance. The monsoon rainfall directly influences food production, and a successful monsoon season contributes significantly to the nation's food security. A good monsoon season leads to increased crop yields, improved agricultural productivity, and reduced dependency on food imports. Adequate rainfall also contributes to the availability of water for livestock and enhances the overall rural livelihoods, as agriculture remains the primary occupation for a significant portion of the rural population.

The monsoon's impact extends beyond agriculture and food security, playing a vital role in the Indian economy as a whole. A successful monsoon season positively influences rural income, purchasing power, and consumption patterns. Increased agricultural production leads to surplus supply, which stabilizes food prices and helps control inflation. Moreover, a prosperous agricultural sector boosts rural employment, stimulates rural industries, and contributes to the overall economic growth of the country.

The monsoon rains hold immense importance for Indian agriculture, shaping the country's food production, livelihoods, and economy. Timely and sufficient monsoon rainfall ensures water availability for irrigation, facilitates crop cultivation, and improves agricultural productivity. It directly impacts food security, rural income, and the overall well-being of the population. Given the critical role that monsoon plays, it becomes imperative for the Indian government and agricultural stakeholders to focus on water conservation, irrigation infrastructure, and sustainable farming practices to mitigate the risks associated with unpredictable monsoon patterns. By recognizing and addressing the significance of the monsoon, India can continue to harness its agricultural potential and secure a prosperous future for its farmers and the nation as a whole.

अगस्त माह के कृषि कार्य

अगस्त माह जिसे आप श्रावण-भाद्रपद भी कहते है, बरसात की झड़ी लगा देता है तथा चारों तरफ हरियाली से भर देता है। खुशी के साथ-साथ मच्छरों से मलेरिया व डेंगू का प्रकोप तथा पशुओं में खुरपका-मुहपका रोग भी फैलने लगता है। फसलों में भी कीटों तथा बिमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है।

तीन जरुरी बातें

- कीट नियंत्रण (पूरी पैदावार का आधार): अगस्त माह में कीटों की संख्या में बहुत बढ़ोतरी हो जाती है तथा फसलों के पत्तों, रस, फूल व फलों को अपना भोजन बनाते हैं। इससे पैदावार में काफी कमी हो जाती है। समय पर फसल लगाने तथा उपयुक्त कीटनाशकों के प्रयोग से नुकसान को कम किया जा सकता है।
- रोग नियंत्रण (उपज गुणवत्ता का आधार): इसी माह में बहुत सी बीमारियां भी फैलती है जिससे उपज में कमी के साथ-साथ गुणवत्ता भी गिर जाती है। रोगरोधी किस्में, बीजोपचार तथा बीमारीनाशक दवाईयों का समय पर प्रयोग लाभदायक रहता है।
- खरपतवार नियंत्रण (भरपूर फसल का आधार): खेतों के बीच तथा मेढ़ों पर घास-फूस बिल्कुल न उगने दें, इससे बीमारियों तथा कीटों को संरक्षण मिलता है। बीमार पोधों को भी खेत से निकालकर नष्ट कर दें ताकि बीमारीयों को फैलने से रोका जा सके।

धान

धान के खेतों में पानी लगातार रहना चाहिए तथा सप्ताह में एक बार पानी बदल दें। पानी की कमी की स्थति में कम से कम खेतों को गीला जरूर रखें। शेष बची यूरिया की मात्रा देने से पहले खेत से पानी तथा खरपतवार निकाल दें तथा अगले दिन फिर 2 इंच तक खेतों में पानी खडा कर दें। धान में फास्फोरस भी दो बार दिया जा सकता है दूसरी किस्त रोपाई के

7 दिन तक दे दें । यदि जिंक नहीं दिया हो तो 3 सप्ताह बाद धान की फसल पीली पड़ सकती है तथा पत्तों पर भूरे धब्बे आ जाते हैं। यदि लेव बनाते समय जिंक सल्फेट न डाला हो तो इसके लिए तीन छिडकाव (7 कि ग्रा। जिंक सल्फेट + 27 कि ग्रा। यूरिया को घोल 100 लीटर में) करें। पहला छिडकाव एक महीने बाद तथा फिर 17 दिन के अन्तर पर करें। बीमारियों में तना गलन रोग पौधों के तनों को गला देता हैं, पोधे जमीन पर गिर पडते हैं तथा तना चीरने पर सफेद रूई जैसी फफूंद तथा काले रंग के पिण्ड पाये जाते हैं रोकथाम के लिए रोपाई से पहले खेतों तथा मेडों पर पडे पिण्डों तथा ठूठों को जला दें। खेत में हर हफ्ते पानी बदल दें तथा रोगग्रस्त खेत का पानी स्वस्थ्य खेत में न जाने दें।

गन्ना

अगस्त में गन्ने को बांधे तांकि फसल गिरने से बचे तथा पौध संरक्षण पर पूरा ध्यान दें क्योंकि इस माह काफी कीट व बीमारियां लगने का भय रहता है। अगोला बेधक, पायरिल्ला, गुरदासपुर बोरर तथा जडबेधक कीटों का पिछले महीनों में बताये तरीकों से रोकथाम करें । रत्ता रोग फफूंद के कारण लगता है। पत्ते पीले पड जाते हैं, गन्ना पिचक जाता हैं तथा उस पर काले दाग पड जाते हैं तथा गन्ना बीच से लाल हो जाता है जिससे सफेद आडी पट्टियां दिखाई देती हैं तथा गन्ने से शराब की सी बू आती है। रोकथाम के लिए रोगी पौधों को निकाल कर जला दें। बीमारी वाली फसल जल्दी काट लें। बीमारी वाले खेत से मोठी फसला न लें तथा 1 साल तक गन्ना न बोर्ये। रोगरोधी किस्म सी। ओ। एस-767 लगायें। सोका रोग भी फफूंद के कारण होता है तथा इसमें पत्ते सूख जाते हैं, गन्ने हल्के व खोखले हो जाते हैं। रोकथाम के लिए बिजाई स्वस्थ्य पोरियों से करें तथा रोगी खेत में कम से कम तीन साल तक अलग फसल चक्र अपनाएँ।

मक्का

वर्षा का पानी मक्का के खेत में खड़ा नहीं रहना चाहिए। इसका निकास लगातार होते रहना चाहिए। खरपतवार खेत से बराबर निकालते रहें। देर से बुआई वाली फसल में पौधे घुटनों की ऊंचाई पर आ गये होंगे वहां नत्रजन की दूसरी किस्त एक बोरा यूरिया लगाएँ। जहां अगस्त में मक्का की फसल में झंडे आने लग गये है वहां नत्रजन की तीसरी किस्त यूरिया पौधों के आसपास डालें। बीमारियों में बीज गलन, पीथियम तना गलन, जीवाणु तना गलन, पत्ता अंगमारी तथा डाऊनी मिल्डयु है। इन रोगों के सामूहिक रोकथाम के लिए जून माह में बताया जा चुका है। रोगी पौधों को खेत से निकाल कर नष्ट कर दें।

बाजरा

फसल में 1/4 बोरा यूरिया पौध छटाई पर दें तथा शेष 1/4 बोरा सिट्टे बनते समय पर दें। बाजरें में फुटाव तथा फूल आने की स्थिति के समय खेत में नमी बनाएं रखें। भारी वर्षा होने पर फालतू पानी तुरंत निकाल दें। सफेद लट कीडे के प्रौढ़ भूण्डों की रोकथाम के लिए वृक्षों पर से गिराकर इकट्ठा करके मिट्टी के तेल से जला दें। बालों वाली सुण्डियों को 270 मि.ली. मोनोक्रोटोफास 36 SL या 700 मि.ली. एण्डोसल्फान 37 ईसी को 270 लीटर पानी में मिलाकर छिड़के। भूण्डों की रोकथाम हेतु लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 70 ईसी को 270 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। रोगग्रस्त पौधों को उखाडकर नष्ट कर दें।

कपास

कपास में फूल आने के समय नाइट्रोजन की बाकी आधी मात्रा दें। नाइट्रोजन देने से पहले खेत में काफी नमी होनी चाहिए, परंतु पानी खड़ा नहीं होना चाहिए। वर्षा के बाद अतिरिक्त जल का निकास तुरंत होना चाहिए। यदि फूल आने पर खेत में नमी नहीं होगी, तो फूल और फल झड़ जाएंगे तथा पैदावार कम हो जाएगी। एक तिहाई टिंडे खुलने पर आखिरी सिंचाई कर दें। इसके बाद सिंचाई न करें तथा खेत में वर्षा का पानी खड़ा न होने दें।

फूल आने पर नेफ्थलीन एसीटिक एसिड 70 सी.सी. का छिड़काव अगस्त के अंत या सितंबर के शुरू में करें। इस छिड़काव से फूल व टिंडे सड़ते नहीं व पैदावार ज्यादा मिलती है। अत्यधिक व असामयिक वर्षा के कारण सामान्यतः पौधों की ऊंचाई 1.5 मीटर से अधिक हो जाती है, जिससे उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतएव 1.5 मीटर से अधिक ऊंचाई वाली मुख्य तने की ऊपर वाली सभी शाखाओं की छंटाई सिकेटियर (कैंची) से कर देनी चाहिए। इस छंटाई से कीटनाशक रसायनों के छिड़काव में आसानी होती है तथा छिड़काव पूरी तरह संभव होता है।

मूल-विगलन रोग:- मूल-विगलन रोग में पौधों की जड़ सड़ जाती है और छाल के नीचे पीला सा पदार्थ जमा हो जाता है। इस रोग से बचने के लिए अगेती बुआई करनी चाहिए। वीटावैक्स 0.1 प्रतिशत और ब्लाइटॉक्स 0.3 प्रतिशत प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीज को उपचारित करना चाहिए।

कपास का पत्ती लपेटक कीट:- इसकी इल्लियां पत्तियों को लपेटकर एक खोल सा बना लेती हैं और अंदर पत्तियों को खाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए गर्मियों में गहरी जुताई करें ताकि प्यूपा धूप से नष्ट हो जाएं, इसके लार्वा को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए, फसल पर पत्ती लपेटक कीट दिखाई देने पर अंडा पैरासिटोइड-ट्राइकोग्रामा 1.5 लाख प्रति हैक्टर की दर से खेत में प्रयोग करना चाहिए।

हरा तेला, सूंडी, कुबड़ा कीट तथा अन्य पत्ती खाने वाले कीट:- कपास की फसल पर हरा तेला, रोयेंदार सूंडी, चित्तीदार सूंडी, कुबड़ा कीट तथा अन्य पत्ती खाने वाले कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है। हरा तेला कीट के शिशु व प्रौढ़ दोनों ही कपास को नुकसान पहुंचाते हैं। ये हरे रंग के होते हैं, जो कि पत्तियों की निचली सतह पर रहते हैं और टेढ़े चलते दिखाई देते हैं। इनके आक्रमण से पत्ते किनारों से पीले पड़ जाते हैं तथा नीचे की ओर मुड़ने लगते हैं, बाद में कपनुमा हो जाते हैं। पत्तियां पीली व लाल होकर सूख जाती हैं और जमीन पर गिर जाती हैं। पौधों की बढ़वार रुक जाती है व कलियां तथा फूल गिरने लगते हैं, जिससे पैदावार कम हो जाती है। हरा तेला जुलाई-अगस्त में सर्वाधिक हानि पहुंचाता है।

सफेद मक्खी कीट:- सफेद मक्खी कीट का पिछले कुछ वर्षों से कपास में प्रकोप काफी बढ़ रहा है। यह एक बहुभक्षी कीट है, जो कपास की प्रारंभिक अवस्था से लेकर चुनाई व कटाई तक फसल में रहता है। इस कीट के शिशु और प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों की निचली सतह पर रहकर रस चूसते हैं। प्रौढ़ 1-1.5 मि.मी. लंबे, सफेद पंखों व पीले शरीर वाले होते हैं, जबकि शिशु हल्के पीले एवं चपटे होते हैं। ये फसल को दो तरह से नुकसान पहुंचाते हैं। एक तो रस चूसने की वजह से, जिससे पौधा कमजोर हो जाता है। दूसरा पत्तियों पर चिपचिपा पदार्थ छोड़ने की वजह से, जिस पर काली फफूंद उग जाती है और यह पौधे के भोजन बनाने की प्रक्रिया में बाधा डालती है।

यदि अगस्त में सफेद मक्खी कीट का आक्रमण हो जाए तो, मैटासिस्टॉक्स 25 ई.सी. व एक लीटर नीम आधारित कीटनाशक या 300 मि.ली. डाइमेथोएट 30 ई.सी. का बारी-बारी से 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

कपास में फूल आने के समय नत्रजन खाद की बाकी आधी मात्रा दे दें। खरपतवार भी निकालते रहें। नत्रजन खाद देने से पहले खेत में काफी नमी होनी चाहिए परंतु पानी खड़ा नहीं होना चाहिए। वर्षा के बाद अतिरिक्त जल का निकास तुरंत होना चाहिए। यदि फूल आने पर खेत में नमी नहीं होगी तो फूल और फल झड़ जाएगे तथा पैदावार कम हो जायेगी। एक तिहाई टिण्डे खुलने पर आखिरी सिंचाई कर दें। इसके बाद कोई सिंचाई न करें तथा खेत में वर्षा का पानी खडा न होने दें। देसी कपास में अगस्त माह के पहले पखवाडे में कपास से निकल रहे फूटों को काट दें, इससे पैदावार बढ़ जाती है। फूल आने पर नेप्थलीन ऐसीटिक एसिड 70 सी सी का छिडकाव अगस्त के अंत या सितम्बर के शुरू में करें। छिडकाव में खारा पानी का प्रयोग नहीं करें। इस छिडकाव से फूल व टिण्डे सडते नहीं व पैदावार ज्यादा मिलती है।

अगस्त माह कपास की फसल पर हरा तेला, रोयेदार सुण्डी / कातरा, चित्तीदार सुण्डी, कुबडा कोडा तथा अन्य पत्ती खाने वाले कीडे का प्रकोप बढ़ जाता है। इन कीडों की तथा कपास की बीमारियों की रोकथाम जुलाई माह में बता चुके है फिर भी बीजोपचार ही सबसे उत्तम बिधि है। कपास के खेत के निकट भिण्डी न उगायें तथा आसपास पीली बूटी, कंघी बूटी व अन्य खरपतवारों को नष्ट कर दें। नीबू जाति के बागों के पास अमेरिकन कपास न बोयें।

दलहनी फसल

मूंग, उड़द, लोबिया, अरहर, सोयाबीन – इस प्रकार की दलहनी फसलों में फूल आने पर मिट्टी में हल्की नमी बनाये रखें इससे फूल झडेगें नही तथा अधिक फलियां लगेगी व दाने भी मोटे तथा स्वस्थ्य होंगे परंतु खेतों में वर्षा का पानी खडा नहीं होना चाहिए तथा जलनिकास अच्छा होना चाहिए । इन दलहनी फसलों में फलीछेदक कीड़े का प्रकोप भी इसी महीने आता है इसके लिए जब 70 प्रतिशत फलियां आ जाएं तो 600 मि.ली. एण्डोसल्फान 35 ईसी या 300 मि.ली.। मोनोक्रटोफास 36 एस एल को 300 लीटर पानी में घोलकर छिड़के। जरूरत पड़ने पर 17 दिन बाद फिर छिडकाव कर सकते हैं।

मूंगफली

यदि मूंगफली में फूल आने की अवस्था है तो सिंचाई अवश्य करें तथा दूसरी सिंचाई फल लगने पर जरूरी है इससे मूंगफली की सूइयां जमीन में आसानी से घुस जाती है। मूंगफली फसल बोने के 40 दिन बाद इनडोल ऐसिटिक एसिड 0.7 ग्राम को एल्कोहल (7 मि. ली.) में घोलें तथा 100 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिडकें फिर 1 सप्ताह बाद 6 मि. ली. इथरल (40 प्रतिशत) 100 लीटर पानी में घोलकर छिडकने से मूगफली की पैदावार 17 से 27 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। मूंगफली तथा तिल में कीडों तथा बीमारियों की रोकथाम जुलाई माह में बता चुके हैं।

फूल आने के एक सप्ताह बाद फल उतार लें नहीं तो फल रेशेदार होने से कम कीमत मिलती है। खेत में नमी बनाये रखें तथा 20 कि.ग्रा. यूरिया छिडके। कीडों में फलीछेदक को फूल आने से पहले 500 मि.ली. मैलाथियान 70 ई सी का छिडकाव करें। इसके बाद 7 दिन तक फल न उतारें। रोगों की रोकथाम स्वथ्य बीजोपचार से ही संभव है।

बैंगन व टमाटर

बैंगन व टमाटर की पौध जुलाई अन्त में अगर नहीं लगाई तो अगस्त में रोपाई कर दें। अगस्त माह में खरपतवार नियंत्रण तथा खेत में उचित नमी बनाये रखें तथा अतिरिक्त पानी का निकास करते रहें। 1/2 बोरा यूरिया रोपाई के 3 सप्ताह बाद दें।

गाजर

किसान अगस्त में खेत खाली कर 4 से 5 बार अच्छी गहरी जुताई कर लें. इसके बाद गोबर की खाद डालकर सिंचाई कर गाजरों की बुवाई कर सकते हैं.

उन्नत किस्म-पूसा मेघाली, पूसा केशर, हिसार गेरिक, पूसा जमदग्नि, नैन्टीज और चैंटनी आदि.

खीरा

खीरा तथा अन्य सब्जियों में फल छेदक कीडों का हमला होने का खतरा बना रहता है। किसान भाइयों को दवाईयों का छिडकाव समय-समय पर करते रहना चाहिए। परंतु दवाई छिडकने के एक सप्ताह बाद ही फल तोड़े तथा पानी से सब्जी अच्छी तरह धोये। इस फसल में 1/2 बोरा यूरिया छिटकें इससे फल अच्छे लगेगें।

पत्तागोभी व फूलगोभी

पत्तागोभी व फूलगोभी इसकी अगेती फसल के लिए अगस्त में नर्सरी लगाएं । पत्तागोभी की गोल्डन एकड तथा पूसा मुक्ता व फूलगोभी की पूसा सिंथेटिक, पूसा सुभद्रा तथा पूसा हिमज्योति किस्में चुनें। 270 ग्राम बीज को 1 ग्राम केप्टान से उपचारित कर 1 फुट चौडे व सुविधानुसार लम्बे व ऊचीं नर्सरी शैया में लगाएं । बीच में अच्छी चौडी नालियां रखें। नर्सरी में सड़ी-गली खाद अच्छी मात्रा में मिला दें। नर्सरी में बीज लगाने के बाद उचित नमी बनाये रखें तथा धूप से भी बचाएं। पौध की रोपाई सितम्बर में करें।

गाजर – मूली

इनकी अगेती फसल के लिए अगस्त में बोआई करें। गाजर की पूसा केसर तथा पूसा मेघाली किस्मों को 2-2.7 कि. ग्रा. बीज को 1-1.7 फुट दूर लाइनों में आधा इंच गहरा लगाएं। मूली की पूसा देशी किस्म का 3-4 कि. ग्रा. बीज 1 फुट लाइनों में तथा 6 इंच दूरी पौधों में रखकर लगाय। बोने से पहले खेतों में आधा बोरा यूरिया 1 बोरा सिंगल सुपर फास्फेट तथा आधा बोरा मयूरेट आफ पोटाश डालें। मूली व गाजर में बहुत पानी की जरूरत पडती है तथा हर 4-5 दिन में फसलों को पानी चाहिए।

Glimpses of the 17th Indian Cooperative Congress

कृषक भारती कोआपरेटिव लिमिटेड

KRISHAK BHARATI COOPERATIVE LIMITED

कृभको भवन, ए-10, सैक्टर-1, नोएडा - 201301, जिला गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)

KRIBHCO Bhawan, A-10, Sector-1, NOIDA - 201301, District Gautam Budh Nagar (U.P.)

Designed by Wide Reach Advertising